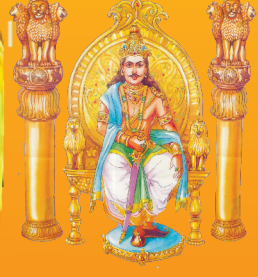





- केन्द्रीय कार्यालय -

नईबस्ती, फुलवरिया, मानिक नगर कालोनी, वाराणसी (उ.प्र.) भारत
कैम्प कार्यालय- कुन्दन नगर, शिवपुर, वाराणसी (उ.प्र.) भारत
मो० : 9453455691, 8115081551, 9936967045
वेबसाईट : www.vbm.org.in, ई-मेल- info@vbm.org.in


विश्व बौद्ध महासंघ





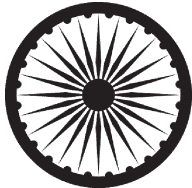
नमो बुद्धाय!

चलें बौद्ध धम्म की ओर।
युद्ध नहीं, बुद्ध चाहिये।।





जय भीम!

विश्व बौद्ध महासंघ



जानें इतिहास!
निभायें कर्तव्य!!
तोड़ें गुलामी!
बनायें बौद्ध शासक राष्ट्र!!

1

“जो कुछ मैं कर पाया हूँ, वह जीवन भर मुसीबतें सहन करके, विरोधियों से टक्कर लेने के बाद ही कर पाया हूँ। जिस कारवाँ को आप यहाँ देख रहे हैं, उसे मैं अनेक कठिनाइयों से यहाँ ले आ पाया हूँ, अनेक अवरोध, जो इसके मार्ग में आ सकते हैं, के बावजूद इस कारवाँ को बढ़ते रहना है। अगर मेरे अनुयायी इसे आगे ले जाने में असमर्थ रहें, तो उन्हें यहीं पर छोड़ देना चाहिए, जहाँ पर यह अब है, पर किन्हीं भी परिस्थितियों में इसे पीछे नहीं हटने देना है। मेरी जनता के लिए मेरा यही संदेश है।”

- डॉ० अम्बेडकर

“जीवन लम्बा होने की बजाय महान होना चाहिए”

- डॉ० अम्बेडकर

- उदाहरण अपने जीवन से प्रस्तुत करना पड़ता है”
- मन सब कुछ है! तुम जैसा सोचते हो!! वैसा बन जाते हो।
- मैं कभी नहीं देखता कि क्या किया जा चुका है, मैं हमेशा देखता हूँ कि क्या किया जाना बाकी है।
- राजनैतिक सत्ता रहे न रहे, सामाजिक आन्दोलन चलते रहना चाहिए।”

- तथागत बुद्ध

- मा० काशीराम

2

विश्व बौद्ध महासंघ

(३.२)

परिचय

स्थापना	- बुद्ध पूर्णिमा, सोमवार - 4 मई 2015
उद्देश्य	- बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का मिशन “बौद्ध शासक राष्ट्र का पुनर्निर्माण” को साकार करना।
सेमिनार/कैंडर का विषय-	- बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का ‘समग्र मिशन’ तथा हम सबका दायित्व एवं कर्तव्य
केन्द्रीय कार्यालय	- मानिक नगर कालोनी, फुलवरिया, वाराणसी - 221106
कैम्प कार्यालय	- बुद्ध भवन कुन्दन नगर, शिवपुर, वाराणसी-221003 (उ०प्र०) भारत
वेबसाइट	- www.vbm.org.in
ई-मेल	- info@vbm.org.in
फेसबुक	- VISHVA BAUDDH MAHASANGH
सम्पर्क नं०	- 9453455691, 8115081551 9936967045

3

अनुषांगिक संगठन

1. बौद्ध युवा संघ
2. बौद्ध शैक्षणिक संघ
3. बौद्ध स्वास्थ्य संघ
4. बौद्ध सांस्कृतिक संघ
5. बौद्ध विधिक संघ
6. बौद्ध महिला संघ

कार्य विधि

1. बौद्ध युवा संघ- प्रत्येक गाँव/मोहल्ला में बौद्ध युवा संघ का गठन किया जाता है। जिसमें संरक्षक, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष उसी गाँव/मोहल्ले के युवाओं को बनाया जाता है। जिनके द्वारा ‘तिसरन’ नामक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। तिसरन पाली भाषा का शब्द है। जिसका हिन्दी अर्थ त्रिशरण होता है। बौद्ध धम्म में तिसरन का अर्थ (1) बुद्धं सरणं गच्छामि अर्थात् मैं बुद्ध गुणों के शरण में जाता हूँ। (2) धम्मं सरणं गच्छामि अर्थात् मैं नैतिकता/सदाचार की शरण में जाता हूँ। (3) संघं सरणं गच्छामि अर्थात् मैं बौद्ध समाज के शरण में जाता हूँ। तिसरन कार्यक्रम बौद्ध युवा संघ के पदाधिकारियों द्वारा किया जाता है। जिसके अन्तर्गत निम्न कार्य होते हैं-

4

1. गांव/मोहल्ले में स्थापित बौद्ध विहार, बाबा साहेब की प्रतिमा, बौद्ध महापुरुषों की प्रतिमा या तथागत बुद्ध एवं बाबा साहेब के फोटो के समक्ष पंचशील ध्वज लगाकर ‘तिसरन’ कार्यक्रम प्रत्येक रविवार को प्रातः 6 बजे से आयोजित किया जाता है।
2. सर्वप्रथम बुद्ध वन्दना, त्रिशरण एवं पंचशील किया जाता है।
3. शारीरिक व्यायाम, दौड़, खो-खो, कराटे एवं अन्य खेलों का आयोजन किया जाता है।
4. विश्व बौद्ध महासंघ की कैंडर बुक ‘समग्र मिशन’ का वाचन एवं बाबा साहेब के मिशन पर चर्चा-परिचर्चा किया जाता है।
5. मदिरा पान, धूम्रपान, शोषण, अत्याचार एवं अन्य सम-सामयिक सामाजिक समस्याओं पर चर्चा एवं निवारण करने का कार्य किया जाता है।
2. **बौद्ध शैक्षणिक संघ-** प्रत्येक गाँव/मोहल्ला में छात्र/छात्राओं को शिक्षित करने एवं शिक्षा के महत्व को बताने का कार्य किया जाता है तथा आवश्यकतानुसार छात्र/छात्राओं को ट्यूशन एवं शिक्षा से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध करायी जाती है।
3. **बौद्ध स्वास्थ्य संघ-** प्रत्येक गाँव/मोहल्ला में समय-समय पर निःशुल्क स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन किया जाता है। जिसमें निःशुल्क जांच, दवाओं का वितरण, स्वास्थ्य संबंधी सलाह एवं जानकारी/सुझाव दी जाती है।
4. **बौद्ध सांस्कृतिक संघ-** बौद्ध धम्म के सभी रीति-रिवाज, संस्कार भिक्खु संघ/बौद्धाचार्य के द्वारा सम्पन्न कराया जाता है तथा समय-समय पर बौद्धाचार्य का प्रशिक्षण दिया जाता है।

आदि बेचकर किसी तरह से परिवार का खर्च चलता था। एक दिन घर का मालिक एक कटोरा बेचने के लिए दुकान पर ले गया। दुकानदार उस कटोरे की जांच करने के बाद उस आदमी को बहुत ध्यान से देखा और फिर कहा कि साहब इसकी कीमत बहुत ज्यादा है, आप इसे क्यों बेच रहे हैं ? उस आदमी को लगा कि यह दुकानदार उसकी गरीबी का मजाक उड़ा रहा है। वह हाथ जोड़कर उस दुकानदार से कहा कि मैं तो एक पीतल का कटोरा आपके यहाँ बेचने के लिए लाया हूँ। इस कटोरे के बदले आप मुझे जो भी सौ-पचास देंगे उसी से मैं अपने परिवार के लिए कुछ खाने का सामान खरीद कर ले जाऊँगा। तब उस दुकानदार ने कहा कि यह पीतल का नहीं बल्कि सोने का कटोरा है। लगता है आपके पूर्वज बहुत अमीर रहे होंगे तभी तो आपके घर में सोने के बर्तन हैं। उस दुकानदार ने उस आदमी को कटोरे की वास्तविक कीमत दिया जो लाखों में थी। उस आदमी ने उन लाखों रूपयों से व्यापार करना शुरू कर दिया और खूब मेहनत करने लगा। उसका व्यापार खूब फलने-फूलने लगा। परिणाम यह हुआ कि वह परिवार पुनः अमीर हो गया और सुख-सम्मान पूर्वक जीवन जीने लगा। वास्तव में हमारे समाज की दशा भी उस गरीब आदमी जैसी ही है। हमारे पूर्वज इस देश के हुक्मरान थे और हमारा समाज इस देश का मालिक था। आज हमारे समाज की दशा माँगने वालों की है जबकि हमारा समाज देने वाला था। हमारे पूर्वजों ने दुनिया के सबसे महान धर्म बौद्ध धर्म का निर्माण किया था, लेकिन हमारा समाज हजारों वर्षों से अछूत का जीवन जी रहा है। हमारे पूर्वजों ने दुनिया की सबसे महान सभ्यता सैन्धव सभ्यता का निर्माण किया। जबकि आज हमारा समाज हिन्दू सभ्यता का गुलाम बना हुआ है। यदि हम

5. **बौद्ध विधिक संघ-** बौद्ध अनुयायियों पर हुए अत्याचार, शोषण एवं संवैधानिक अधिकारों की कानूनी सलाह दी जाती है।
6. **बौद्ध महिला संघ-** बौद्ध महिलाओं के सशक्तिकरण एवं बौद्ध धर्म का सांस्कृति प्रचार-प्रसार किया जाता है।

उद्देश्य/लक्ष्य एवं सिद्धान्त

हमारी गुलामी और दुर्दशा ने हमें यह विवश कर दिया है कि हम अपने समाज का पुनर्निर्माण करें। अपने समाज का कठोर विश्लेषण करें तथा सत्य को स्वीकार करने का साहस करें। उसे इतना मजबूत व स्वस्थ बनायें कि वह किसी भी आक्रमण का सामना करने में सक्षम हो। इसके लिए समाज में एकता लाना होगा और समाज में एकता लाने के लिए विचारों व भावनाओं में एकरूपता लाना होगा। हमें विचारों व भावनाओं में एकरूपता लाने के लिए समाज की अव्यवस्था व विघटन को समाप्त करना होगा। हमें समान उद्देश्य निर्धारित करना होगा। वह उद्देश्य है “**बौद्ध शासक राष्ट्र का पुनर्निर्माण**”। हम ऐसा तभी कर सकते हैं जब हमें अपने इतिहास का वास्तविक ज्ञान हो, क्योंकि इतिहास की नींव पर ही भविष्य रूपी इमारत का निर्माण किया जाता है। इतिहास से ही पता चलता है कि हम क्या थे ? क्या हैं ? और हमें क्या होना चाहिए ?

इतिहास का महत्व एक कहानी से स्पष्ट होता है, और कहानी का नाम है गोल्डेन बाउल। एक आदमी था जिसके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी थी, यहाँ तक कि घर के बर्तन

लोग अपने इतिहास को उसके वास्तविक रूप में जान जाँय, और अपने महापुरुषों के सपनों को साकार कर दें तो हमारा समाज पुनः देश का हुक्मरान बन जायेगा। हमलोग अछूत न कहलाकर बौद्ध कहलायेंगे। हम सबका दायित्व है कि हम लोग समाज को अपने गौरवशाली इतिहास के बारे में बतायें तथा उन्हें अपने महापुरुषों व इतिहास पर गर्व करना सिखायें।

बुद्धघोष- विश्व बौद्ध महासंघ

- इतिहास से प्रेरणा मिलती है।

● प्रेरणा से जागृति आती है।

● जागृति से सोच बनती है।

● सोच से ताकत आती है।

● ताकत से शक्ति बनती है।

● और शक्ति से शासक बनता है।।
- सफलता कभी पक्की नहीं होती तथा असफलता कभी अन्तिम नहीं होती। इसलिए अपनी कोशिश तब तक जारी रखो, जब तक आपकी जीत एक इतिहास न बन जाय।
-डॉ० अम्बेडकर
- जो इतिहास बनाना चाहते हैं उन्हें अपने समाज के इतिहास को वास्तविक रूप में जानना आवश्यक है। इतिहास की नींव पर ही भविष्य की इमारत बनती है। जो कौम अपना इतिहास नहीं जानती, वह कौम अपने भविष्य का निर्माण नहीं कर सकती।
-डॉ० अम्बेडकर

राजनैतिक और सैनिक शक्ति सामाजिक व्यवस्था पर ही निर्भर करती है (भगवान बुद्ध और उनका धम्म पेज-438)

1. एक समय भगवान बुद्ध राजगृह में गृद्ध कूट पर्वत पर विहार कर रहे थे।
2. उस समय मगधराज वैदेही पुत्र अजातशत्रु वज्जियों पर आक्रमण करना चाहता था उसने अपने मन में कहा कि चाहे वह कितने भी शक्तिशाली भूक्तों न हों मैं उन वज्जियों का समूल नाश कर दूंगा। मैं उन वज्जियों को बिल्कुल नष्ट कर डालूंगा।
3. अतः मगध के प्रधानमंत्री वर्षकार को बुलाया और कहा।
4. तुम भगवान बुद्ध के पास जाओ और मेरी ओर से उनके चरणों में अभिवादन करना, फिर उनका कुशल पूछना कि वे निरोग व स्वस्थ तो हैं और आनन्द पूर्वक तो रह रहे हैं।
5. और तब उनसे कहना कि मगधराज वैदेही पुत्र अजातशत्रु वज्जियों पर आक्रमण करना चाहता है। चाहें वे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों वह उन वज्जियों का सर्वनाश करके रहेगा।
6. ऐसा कहने पर तथागत जो कुछ भी कहें उसे ध्यानपूर्वक सुनना और आकर मुझे बताना क्योंकि बुद्ध का कथन कभी असत्य नहीं होता।
7. वहाँ पहुँचकर वर्षकार ने तथागत को अभिवादन किया उनका

- कुशल समाचार पूछा और राजा की आज्ञा के अनुसार मगधराज का सन्देश तथागत को दिया।
8. उस समय आनन्द महाथेर तथागत के पीछे खड़े थे। तथागत ने आनन्द को सम्बोधित किया आनन्द क्या तुमने सुना है कि वज्जिगण के लोग प्रायः अपनी बैठके करते हैं।
 9. आनन्द महाथेर ने उत्तर दिया हाँ भगवान मैंने ऐसा सुना है।
 10. तथागत ने आगे कहा आनन्द जब तक वज्जिगण अपनी बैठके करते रहेंगे तब तक उनका पतन नहीं होगा। बल्कि समृद्धि होगी।
 11. जब तक वे अपने ज्येष्ठ वज्जियों का आदर सत्कार करते रहेंगे उनकी आवश्यकताएं पूरी करते रहेंगे उनकी बातों को महत्व देना अपना कर्तव्य समझते रहेंगे। वे अपने वज्जिगण की किसी वज्जि लड़की या स्त्री को बलपूर्वक अपहरण करके अपने पास नहीं रोकेंगे।
 12. जब तक वज्जिगण अपने धम्म का आदर और पालन करते रहेंगे। आनन्द! तब तक वज्जियों की वृद्धि होती ही रहेगी। उनका पतन नहीं होगा और कोई उनका नाश भी नहीं कर सकता।
 13. संक्षेप में भगवान बुद्ध ने कहा कि जब तक वज्जिगण प्रजातंत्र में विश्वास करते हैं और प्रजातंत्रात्मक ढंग से कार्य करते हैं तब तक उनके गणराज्य को कोई खतरा नहीं है।
 14. तब तथागत ने वर्षकार को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब मैं एक बार वैशाली में ठहरा हुआ था तब मैंने ये बातें वज्जियों को सिखाई थी।

9

10

15. तब वर्षकार बोला- तो हम वज्जियों के कल्याण की आशा कर सकते हैं। अवनति की नहीं। जब तक वे इन शिक्षाओं का पालन करते हैं। हे गौतम! तब तक मगधराज वज्जियों को नहीं जीत सकता।

(1) असंगठित और टुकड़े-टुकड़े समाज के लोगों के सामने सबसे बड़ा संकट यह होता है कि यह कई तरह के जीवन मापदंडों एवं आदर्शों को जन्म देती है।

(2) जब कि जब तक लोगों के जीवन के मापदंड समान न हों जब तक आदर्श समान न हों तब तक समाज परस्पर मिल-जुलकर रहने वाला समाज बन ही नहीं सकता। -भगवान बुद्ध उनका धम्म

(1) बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर उपयुक्त तथ्य को स्पष्ट करते हुए कहा है कि 'राजनैतिक शक्ति सामाजिक शक्ति पर ही निर्भर करती है।'

(2) बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम साहब स्पष्ट करते हुए कहा है कि 'समाज तैयार करो, सत्ता अपने आप मिल जायेगी।' sit together ! think together !!

'जिस समाज की राजनैतिक सत्ता होती है उनकी स्वतंत्रता को कोई नकार नहीं सकता है।'

'यह सर्वविदित सत्य है कि जिस समाज के पास सत्ता होती है उस व्यक्ति की अपेक्षा अधिकतम ताकतवर होता है।'

-डॉ० अम्बेडकर

11

बुद्ध वन्दना

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स
(उस भगवान अर्हत् सम्यक सम्बुद्ध को नमन)

त्रिशरण

बुद्धं सरणं गच्छामि
धम्मं सरणं गच्छामि
संघं सरणं गच्छामि

(मैं बुद्ध (बुद्धगुणों), धर्म और संघ की शरण जाता हूँ)

दूसरी बार भी दुतियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि

दुतियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि

दुतियम्पि संघं सरणं गच्छामि

तीसरी बार भी ततियम्पि बुद्धं सरणं गच्छामि

ततियम्पि धम्मं सरणं गच्छामि

ततियम्पि संघं सरणं गच्छामि

12

पंचशील

(1) पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि
(मैं प्राणि हत्या से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ)

(2) अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि
(मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ)

(3) कामेसु मिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि
(मैं व्यभिचार से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ)

(4) मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि
(मैं झूठ से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ)

(5) सुरा-मेरय-मज्जपमादट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि
(मैं शराब मदिरा आदि नशीली तथा प्रमादकारी वस्तुओं के सेवन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ)

● जिसकी जितनी संख्या भारी उसकी उतनी हिस्सेदारी

● वोट हमारा, राज हमारा यही चलेगा-यही चलेगा।

● वोट हमारा, राज तुम्हारा नहीं चलेगा-नहीं चलेगा। -मां० कांशीराम

● जिस समाज की गैर राजनैतिक जड़ मजबूत नहीं होती वो समाज राजनीति में कभी सफल नहीं हो सकता।

-बुद्धघोष

-मां० कांशीराम

13

सफल हो गये। रास्ते से डाल हटाकर वे आगे बढ़ गये।

इसी प्रकार बोधिसत्त्व बाबा साहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर के मिशन को साकार करने के लिए हमें कोशिश ही नहीं, बल्कि पूरी कोशिश करनी है। अर्थात् हमें अलग-अलग नहीं बल्कि एक साथ मिलकर कोशिश करनी है। साथ ही हमें अलग-अलग लक्ष्य पर नहीं बल्कि बोधिसत्त्व बाबा साहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा निर्धारित 'समान लक्ष्य' पर कोशिश करनी है।

“लीडर का उद्देश्य जीतना होना चाहिए केवल लड़ना नहीं।”

लीडर के गुण

I	उद्देश्य/दिशा	Direction
II	संकल्प	Determination
III	समय सीमा	Dead-line
IV	अनुशासन	Discipline
V	समर्पण	Dedication

15

सफलता के सूत्र

कोशिश बनाम पूरी कोशिश

सफलता के लिए कोशिश ही नहीं बल्कि पूरी कोशिश की आवश्यकता पड़ती है। एक बार एक पिता-पुत्र जंगल से गुजर रहे थे। आगे रास्ते पर एक डाल गिरी हुई थी। पिता ने पुत्र से कहा कि बेटा डाल हटा दो। बेटे ने कहा कि पिताजी आप गलत कह रहे हैं, मैं तो बहुत छोटा व कमजोर हूँ, मुझसे डाल नहीं हट सकती। पिता ने कहा कि बेटा पूरी कोशिश करो डाल हट जायेगी। बेटा कोशिश किया लेकिन उससे डाल नहीं हटी, तब बेटे ने फिर कहा कि पिताजी मैं तो पहले ही कह रहा था कि छोटा व कमजोर हूँ, मुझसे डाल नहीं हटेगी। आप गलत हैं। पिता ने फिर कहा कि बेटा पूरी कोशिश करो। तुमने पूरी कोशिश नहीं किया है। बेटा फिर कोशिश करता है। इस तरह बेटा बार-बार कोशिश करता है लेकिन हर बार वह असफल होता है। पिता हर बार पूरी कोशिश करने के लिए कहता है। इस प्रकार कई चक्कर यह सब चलता है और अंत में बेटा कहता है कि पिताजी आप गलत हैं। मुझसे डाल नहीं हट सकती। पिता कहता है कि बेटा तुमने कोशिश तो की, लेकिन पूरी कोशिश नहीं की। पूरी कोशिश का अर्थ होता है- अपनों के साथ मिलकर कोशिश करना। मैं तुम्हारा पिता हूँ। अगर तुमसे डाल नहीं हटी तो तुम्हें मुझसे सहायता माँगनी चाहिए। तुमने हमसे तो सहायता माँगी ही नहीं। फिर पिता-पुत्र दोनों मिलकर कोशिश किये, अर्थात् पूरी कोशिश किये और रास्ते से डाल हटाने में

14

संकल्प

(1) तथागत सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा स्थापित महान उद्देश्य के अनुसार कार्य करेंगे। तथागत सम्यक् सम्बुद्ध का उद्देश्य था- “पृथ्वी पर सद्धम्म का साम्राज्य स्थापित करना।” उनके जीवन का उद्देश्य किसी काल्पनिक स्वर्ग की प्राप्ति नहीं, बल्कि पृथ्वी पर सद्धम्म का राज्य स्थापित करना था। धम्म का उद्देश्य आत्माओं का मुक्ति नहीं बल्कि व्यक्ति का कल्याण और समाज की रक्षा करना है। उनका उद्देश्य संसार में दुःखों को कम करना था। व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के प्रति अनुचित व्यवहार के कारण ही दुःख उत्पन्न होता है। उन्होंने कहा कि यदि लोग अपने दुःखों को कम करना चाहते हैं तो हर किसी को एक दूसरे के साथ सदाचारपूर्ण व्यवहार करना होगा। केवल सदाचार द्वारा ही अनैतिकता और उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले दुःख को दूर किया जा सकता है। धम्म द्वारा ही यह निर्धारित होता है कि किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। बुद्ध के धम्म की आधारशिला है- व्यक्ति और व्यक्ति के बीच परस्पर योग्य सम्बन्ध बनाना। वास्तव में तथागत सम्यक् सम्बुद्ध का सद्धम्म “मानव कल्याण के लिए एक मानव द्वारा की गयी एक महान खोज है।”

(2) हम तथागत सम्यक् सम्बुद्ध, महान सम्राट अशोक, बोधिसत्त्व रविदास, बोधिसत्त्व कबीर, राष्ट्रपिता ज्योतिबाराव फुले, राष्ट्रमाता सावित्रीबाई फुले, छत्रपति साहूजी महाराज, सन्त

16

- बाबा गाडगे, पेरियार रामास्वामी नायकर, ललई सिंह यादव, माता रमाबाई अम्बेडकर, बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर, मान्यवर कांशीराम के साथ उन महापुरुषों को ही अपना आदर्श मानेंगे, जो बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार तथा बौद्धों के मान-सम्मान व स्वाभिमान के लिए कार्य किये हैं।
- (3) हम तथागत बुद्ध द्वारा स्थापित सिद्धान्त बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय तथा लोकानुकम्पाय के अनुसार कार्य करेंगे।
 - (4) बौद्ध राष्ट्र का निर्माण करेंगे। बौद्ध राष्ट्र का तात्पर्य है, समता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व व न्याय जैसे मानवीय मूल्यों के आधार पर आदर्श बौद्ध राष्ट्र का निर्माण करना।
 - (5) तथागत सम्यक् सम्बुद्ध बौद्ध सम्राट अशोक और बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा स्थापित मानवीय आदर्शों के अनुसार कार्य करना।
 - (6) हम बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा निर्मित भारतीय संविधान की रक्षा करेंगे।
 - (7) हम सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक लोकतन्त्र की स्थापना करेंगे।
 - (8) हम अन्याय, अत्याचार, शोषण तथा आडम्बर व अन्धविश्वास मुक्त प्रबुद्ध समाज का निर्माण करेंगे।
 - (9) हम तर्क, बुद्धि और विज्ञान पर आधारित समाज का निर्माण करेंगे। ऐसे समाज का निर्माण करेंगे जो किसी बात को केवल इसलिए न माने क्योंकि वह सुनने में आयी है, किसी बात को

- केवल इसलिए न माने क्योंकि वह परम्परा से प्राप्त हुई है, किसी बात को केवल इसलिए न माने क्योंकि वह बात किसी धर्म ग्रन्थ में लिखी है, किसी बात को केवल इसलिए न माने क्योंकि बहुत ज्यादा लोग उसके समर्थक हैं, बल्कि वह किसी बात को इसलिए माने क्योंकि वह बात तर्क और बुद्धि पर आधारित व प्रमाणित है।
- (10) हम ऐसे समाज का निर्माण करेंगे जो किसी आत्मा-परमात्मा में विश्वास न करे, न तो किसी ईश्वरीय या चमत्कारिक सत्ता में विश्वास करे और न ही उसका समर्थन करे।
 - (11) हम तथागत बुद्ध द्वारा स्थापित “धम्मपथ (अष्टांगिक मार्ग)” के आधार पर धम्म का राज्य स्थापित करेंगे।
 - (12) हम ऐसे समाज का निर्माण करेंगे जो मध्यम मार्ग का अनुसरण करें तथा हम पंचशील का पालन करेंगे एवं दूसरों को भी पालन करने के लिए प्रेरित करेंगे।
 - (13) हम ऐसे समाज का निर्माण करेंगे जो अपने कार्य व विचार दोनों ही रूपों में स्वयं को बौद्ध कहे, बौद्ध लिखे और बौद्ध जैसा दिखे।
 - (14) हम ऐसे समाज का निर्माण करेंगे जो न तो स्वर्ग-नर्क में विश्वास करे और न उसका समर्थन करे।
 - (15) बुद्ध धम्म व संघ ही मेरी उत्तम शरण है। इनके अलावा मेरी कोई दूसरी शरण नहीं है। इस सत्य वचन से हम सबका कल्याण हो।

मंगल मैत्री

तेरा मंगल तेरा मंगल तेरा मंगल होय रे।
सबका मंगल सबका मंगल सबका मंगल होय रे।
जिस गुरुदेव ने धर्म दिया है उनका मंगल होय रे।
जिस जननी ने जन्म दिया है उसका मंगल होय रे।
पाला पोषा और पढ़ाया उस पिता का मंगल होय रे।
दृश्य और अदृश्य सभी जीवों का मंगल होय रे।
जल के थल के और गगन के प्राणी सुखिया होय रे।
निर्भय हो निर्वैर बने सब सभी निरामय होय रे।
दसों दिशाओं के सब प्राणी मंगल लाभित होय रे।
जो आये धम्म मार्ग पर उनका मंगल होय रे।
राग द्वेष और मोह मिट जाए चित में समता होय रे।
शुद्ध धर्म व प्रज्ञा जागे शील समाधि होय रे।
अंतर्मल की गांठे, छूटे अंतर निर्मल होय रे।
करुणा मैत्री इस धरती के तृण कण-कण में समाय होय रे।
जन जन मंगल जन जन मंगल जन जन सुखिया होय रे।
तेरा मंगल तेरा मंगल सबका मंगल होय रे।

भवतु सब्ब मंगलं
सबका मंगल हो सबका कल्याण हो।

मेरे भाईयों-बहनों जाओ और अपने घरों की दीवारों पर लिख दो कि हमें इस देश का शासक बनना है।

- डॉ० अम्बेडकर

अपने वोट की कीमत नमक-मिर्च जितनी मत समझो। यह बात मत भूलो कि तुम्हारे प्राण जितनी ही नहीं बल्कि उससे भी अधिक वोट की कीमत है। गलत उम्मीदवार को वोट देना, स्वयं बकरे द्वारा कसाई के हाथ में छुरी देने जैसा है।

- डॉ० अम्बेडकर

जब आप राजनीति में भाग नहीं लेते हैं तो, इसका दुष्परिणाम यह होता है कि अयोग्य लोग आप पर शासन करते हैं। यहाँ तक कि आपके विरोधी भी आप पर शासन करते हैं।

- डॉ० अम्बेडकर

आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप सब विश्व बौद्ध महासंघ के सदस्य बनें तथा अन्य लोगों को सदस्य बनाने के लिए प्रेरित करें जिससे कि हम सब मिलकर अपने बौद्ध महापुरुषों के मिशन “बौद्ध राष्ट्र का पुनर्निर्माण” को साकार कर सकें।

बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर ने कहा है कि “हमें यह महसूस करना है कि एक बौद्ध का कर्तव्य केवल एक बौद्ध होना ही नहीं है। बल्कि उसका कर्तव्य है कि वह बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार भी करें जिससे वह अच्छा बौद्ध बन सके उसे यह मानना होगा कि बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार, मानवता की सबसे बड़ी सेवा करना है।

! अप्प दीपो भव ! ! सबका मंगल हो !